प्रश्न 1. जायसी के काव्य में लोकतत्व पर समीक्षात्मक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर जायसी प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा के सूफी कवि हैं जिनकी कविता में लोकतत्व विद्यमान है। यहां यह बात उल्लेखनीय है कि वे मुसलमान थे। किंतु उन्होंने पद्मावत में हिंदू पर्व-त्यौहारों का ही वर्णन किया है मुस्लिम पर्व-त्यौहारों का नहीं। इसी तरह वे हिन्दुओं की पौराणिक कथाओं का संदर्भ देते हुए राम, कृष्ण, अर्जुन, रावण की चर्चा करते हैं। निष्कर्षतः उनके काव्य में हिन्दू परिवेश का चित्रण हुआ है, मुस्लिम परिवेश का नहीं।

फारसी परंपरा में जंगल और बयाबान का वर्णन कष्ट अथवा विपत्ति के प्रसंग में आता है। हिंदी कवियों में केवल जायसी ने समुद्र वर्णन किया है, वे पुराणों में उल्लिखित 'सात समुद्रों' का वर्णन पद्मावत में करते हैं। इनमें से पाँच समुद्र तो पौराणिक मान्यता के अनुरूप हैं तथा शेष दो 'मानसरोवर' और 'खिलखिल' समुद्रों का जो वर्णन किया है पूर्णतः लोक कथाओं में ही आता है।

विवाह के अवसर पर अटारियों पर

चढ़ी महिलाएं किस प्रकार चूल्हे को देखती हैं, ऐसे दृश्य भी जायसी ने लोकतत्व को ध्यान में रखकर पद्मावत में रखे हैं।

"देखि बरात सखिन्ह सों कहा। इन्ह
महँ सो जोगी कहँ अहा ?"

जायसी ने षड्ऋतु वर्णन एवं बारहमासे के वर्णन में भी लोकतत्व का समावेश किया है। वर्षा ऋतु में बिजली की चमक, बूँदों का सोने के समान झलकना और मेढक की टर्र-टर्र तथा मोर की केका ध्वनि का चित्रण भी जायसी ने किया है। यथा:

"चमक बीजु बरसै जल सोना।
दादुर मोर सबद सुठि लोना।"

गर्मी के कारण तालाबों का पानी सूखने लगता है और सूखे स्थान में बहुत-सी दरारें दिखाई देने लगती हैं। वर्षा की पहली फुहार पड़ते ही वे दरारें भर जाती हैं। जायसी ने प्रकृति के इस सूक्ष्म निरीक्षण को वियोग श्रृंगार पर घटित करके सुंदर दृश्य विधान उपस्थित किया है। वियोगी हृदय को सूखता हुआ सरोवर और प्रिय के दृष्टिपात को 'दवगरा' बनाकर

उन्होंने अपनी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय किया है।

"सरवर हिया घटत नित जाइ। टूक-टूक होइ के बिहराइ। बिहरत हिया करहु पिय टेका। दीठि दवंगरा मेरवहु एका।"

हिन्दुओं के पौराणिक वृतों की जानकारी जायसी को थी, किंतु पक्की जानकारी न थी। कुबेर अलकापुरी में रहता है, किंतु चंद्रमा को वे स्त्री बताते हैं जबकि हिन्दुओं की परंपरा में वह 'चंदा मामा' अधिक प्रसिद्ध है। रामायण - महाभारत के प्रसंगों एवं पात्रों से वे अच्छी तरह परिचित जान पड़ते हैं। इंद्र कर्ण से अक्षय कवच ले जाने के प्रसंग का भी उन्होंने उल्लेख किया है। पद्मावत में त्योहारों का वर्णन भी है, जो लोकतत्व की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

पद्मावत में भारतीय तीर्थों - प्रयाग, काशी, अयोध्या, सेतुबंध, द्वारकापुरी, मथुरा, वृंदावन, जगन्नाथपुरी आदि का उल्लेख भी मिलता है। यही नहीं उसमें तैंतीस देवताओं की बात आई है। इंद्र, विष्णु, ब्रह्मा, शिव

लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती का वर्णन भी है। यथा –

"तैंतीस कोटि देवता साजा।
औ छ्यानवे मेघपर गाजा।"

इस तरह पाते हैं कि जायसी ने हिन्दू जन-जीवन को निकट से देखा-परखा था, इसलिए उन्होंने हिंदू रिति-रिवाज, जीवन पद्धति, लोक-मान्यताओं, लोकाचार संस्कार, परम्पराओं, व्रत-त्योहार आदि का विशद् वर्णन करते हुए पद्मावत में लोकतत्व का समावेश सफलतापूर्वक किया है।